पत्रिका

## राजस्थानी कथेतर साहित्य पर राष्ट्रीय परिसंवाद सम्पन्न, रचनाकारों ने रखे विचार

# कथेतर साहित्य एक स्मृति प्रधान विधा है : प्रोफेसर चारण

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**बांसवाड़ा.** साहित्य अकादेमी और वागड़ साहित्य एवं कला संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को बीवीएमएस सभागार में "राजस्थानी कथेतर साहित्य" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। मुख्य वक्ता ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रो. (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने कहा कि समकालीन राजस्थानी कथेतर साहित्य स्मृति प्रधान सृजन हैं, जो सत्ता की विस्मरण की प्रवृत्तियों के विरुद्ध समाज की चेतना को बचाने का कार्य करता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि "जो कथा नहीं है, जो कथा से इतर है, वही कथेतर साहित्य है।" मुख्य अतिथि प्रो. सत्यनारायण ने राजस्थानी कथेतर लेखन की तुलना विश्व साहित्य से करते हुए कहा कि यह विधा अब ईमानदारी और नवीन शिल्प के साथ आम पाठकों को आकर्षित कर रही है। विशिष्ट अतिथि महिपालसिंह राव और साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने भी विचार व्यक्त किए। साहित्यिक सत्रों में सूर्यकरण सोनी (डायरी लेखन), चेतन्य मालव (संस्मरण व रेखाचित्र), नेहा गुप्ता (ललित निबंध) और हिमेश उपाध्याय (यात्रा-वृत्तांत) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों की अध्यक्षता माधव नागदा और डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने की। संचालन राम पांचाल और हेमंत पाठक ने किया। समापन सत्र में अध्यक्ष डॉ. मंगत बादल ने भाषाई विविधता को राजस्थानी की ताकत बताते हुए राज्य की सभी बोलियों को समेटे रखने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि राजनीतिक उदासीनता के कारण राजस्थानी को आज भी संवैधानिक मान्यता नहीं मिल पाई है। मुख्य अतिथि डॉ. माधव हाड़ा ने कहा कि राजस्थानी गद्य विधा का इतिहास प्राचीन है, जो समय के अनुसार बदलता रहा है। वागड़ी साहित्यकार कमल दोसी ने वागड़ी भाषा की प्रमुख रचनाओं की जानकारी दी। समारोह संयोजक प्रकाश पंड्या ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. सुरेश सालवी, उपेंद्र अणु, डॉ. किरण बादल, डॉ. वीणा हाडा, धर्मिष्ठा पंड्या, दिनेश प्रजापति, भागवत कुंदन, कपिल जोशी सहित अनेक साहित्यप्रेमी, शोधार्थी एवं रचनाकार उपस्थित रहे।

30/06/2025 | Banswara | Page : 13
Source : https://epaper.patrika.com/